प्लेटो,अरस्तू एवं विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं इसकी समसामयिक प्रासंगिकता ।

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) रांची विश्वविद्यालय में पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव।

2024

शोध निर्देशक

डॉ. अजय कुमार सिंह

सह प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग

राँची विश्वविद्यालय,राँची

शोधार्थी

अनुपमा वाउरी

UGC-NET

शोध शीर्षक- प्लेटो, अरस्तू एवं विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन संबंधी अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं इसकी समसामयिक प्रासंगिकता।

विषय परिचय:

चेतन प्राणियों में मानव शिशु सबसे अधिक दुर्वल होता है। जिस समय उसका जन्म होता है, उस समय वह ना चल-फिर सकता है, ना स्वयं खा-पी सकता है और ना ही अपनी आवश्यकताओं को दूसरों पर अभिव्यक्त कर सकता है। जहाँ अन्य पशुओं के शिशु कुछ सप्ताह अथवा कुछ माह बीतते ही हाथ पैरों से पुष्ट हो कर उछलने-कूदने और शिकार करने लगते है,परन्तु मानव-शिशु कितने ही वर्षों तक दुसरे पर निर्भर बना रहता हैं। इसके पश्चात वह भूमण्डल पर ही नही जल और गगन में भी स्वछन्द विचरण करता है। अपने मस्तिष्क की उड़ानों से वह पृथ्वी से करोड़ों कोशों दूर के ग्रह-नक्षत्रों की भी खबर लाता है। यह सब अन्तर कैसे होता है- इसका उत्तर है - 'शिक्षा'। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा दूसरों पर निर्भर मानव शिशु सब प्रकार से विकसित हो कर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करता है। शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है और वे आत्म-विकास के पथ पर अग्रसर होता है। शिक्षा के द्वारा उसका शारीरिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होता है शिक्षा से ही उसका सामाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि मानव के ज्ञान-विज्ञान की प्रगति में शिक्षा की प्रक्रिया सवसे अधिक आश्चर्यजनक, सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सर्वाधिक क्रान्तिकारी खोज है।

अव प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा क्या है ? विभिन्न विचारकों ने शिक्षा के संबंध में कई प्रकार के मत एवं परिभाषाएँ दिये हैं । भारतीय विचारक हो या पाश्चात्य विद्वान सभी ने समान रूप से शिक्षा के प्रत्यय पर गहन विचार किए हैं। इसी संदर्भ में ब्रिटिश दार्शनिक जॉन लॉक ने कहा है कि **‘ मन एक कोरी पटिया की तरह होता है, जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है’।** इस प्रकार शिक्षक का कर्तव्य बालक के खाली मन को नए-नए ज्ञान और सूचनाओं से भरना माना जाता था। शिक्षा सम्बन्धी यह मत पाश्चात्य शिक्षा के इतिहास में प्राचीन और मध्य काल में विशेष रूप से प्रचलित था, किन्तु अधिकांश शिक्षा-शास्त्रियों ने शिक्षा को इस अर्थ में नहीं लिया है । 'शिक्षा' शब्द का पर्याय 'एडुकेशन' शब्द लैटिन भाषा के एडुकेद्व शब्द से निकला है। इसमें दो शब्द शामिल हैं 'इ'(E) और डूको (DUCO)। 'इ' का अर्थ है अन्दर से बाहर की ओर, 'डूको' का अर्थ है आगे बढ़ना। इस प्रकार शाब्दिक रूप में 'एडुकेशन' का अर्थ, अन्दर से

बाहर की ओर बढना या विकसित होना है। अस्तु ने कहा है–**'शिक्षा व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को विकसित करने की प्रक्रिया है'।** अर्थात शिक्षा के द्वारा पूर्ण विकास होता है ।

आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा-शास्त्रियों ने मानव के विकास की प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक और नैतिक विकास पर जोर दिया है। कुछ शिक्षा-शास्त्री नैतिक विकास को ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते है। हरबर्ट ने लिखा है "**नैतिकता में ही शिक्षा का समस्त तत्व निहित है**"। किन्तु भारतीय दार्शनिकों ने नैतिक स्तर को मानव-विकास का सर्वोच्च स्तर नहीं माना है। वे नैतिक स्तर से भी ऊपर धार्मिक स्तर और धार्मिक से भी ऊपर आध्यात्मिक स्तर को मानते है। शिक्षा की जो परिभाषाएँ भारतीय दार्शनिकों ने उपस्थित की हैं, उनमें धार्मिक और आध्यात्मिक विकास पर विशेष जोर दिया गया है। उपनिषदों के ऋषि याज्ञवल्क्य के अनुसार **'शिक्षा वह है जो मनुष्य को सच्चरित्र और संसार के लिए उपयोगी बनाये'।** प्राचीन भारतीय विचारक शिक्षा को मुक्ति का साधन मानते हैं , इसीलिए कहा गया था '**सा विद्या या विमुक्तये**'। समकालीन भारतीय शिक्षा-शास्त्रियों ने भी शिक्षा की परिभाषा करने में उसके आध्यात्मिक पहलू पर विशेष जोर दिया है। विवेकानन्द के शब्दों में, **'मनुष्य की आन्तरिक पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है'।**

अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा-दर्शन कया है? शिक्षा-दर्शन में शिक्षा-सम्बन्धी विचारों और क्रियाओं की कठोरतापूर्वक समीक्षा की जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया में सबसे पहले यह समस्या उत्पन्न होती है कि उसके द्वारा हम कौन से लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते है। शिक्षा का उद्देश्य बालक में वांछित प्रवृतियों का विकास और अवांछित प्रवृतियों की रोकथाम है। शिक्षा के द्वारा हम बालक को अपनी कल्पना के आदर्श समाज के अनुरूप ढालते है। जनतंत्रीय समाज में बालक का सामाजिक विकास इस प्रकार का होना चाहिए कि वह जीवन में जनतंत्रीय आदर्शों का पालन कर सके। प्लेटो, अरस्तू ,विवेकानन्द, गांधी, रवीन्द्रनाथ जैसे शिक्षा-दार्शनिकों ने शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण माना है। किन्तु इसे भी शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि शिक्षा में ज्ञानार्जन का भी महत्व कम नहीं है। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने शिक्षा को मुक्ति का साधन माना था, किन्तु आधुनिक भारतीय परिस्थितियों को देखते हुए विवेकानन्द ने शिक्षा में चरित्र निर्माण और शक्ति के संग्रह पर जोर दिया ,गांधी जी ने व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाना महत्वपूर्ण बतलाया और श्री अरविन्द ने शिक्षा में स्वदेशी के तत्व पर जोर दिया। विभिन्न दार्शनिकों ने शिक्षा के भिन्न-भिन्न लक्ष्यों पर जोर दिया है।

वर्तमान काल में सभी आधुनिक शिक्षाशास्त्री यह मानते हैं कि शिक्षक को ना केवल विभिन्न प्रकार के विषयों का ज्ञान होना चाहिए बल्कि उसका एक अपना शिक्षा-दर्शन भी होना चाहिए, जिसके बिना वह उन समस्याओं को कुशलतापूर्वक नहीं सुलझा सकता, जो दिन -प्रतिदिन एक शिक्षक के जीवन में उसके सामने आती है। जर्मन दार्शनिक फिक्टे ने ठीक ही कहा था कि **'शिक्षा की कला दर्शन के बिना कभी भी पूर्णतया स्पष्ट नहीं हो सकती'**। इन दोनों में अन्तर्क्रिया आवश्यक है और इनमें से कोई भी एक दूसरे के बिना अपूर्ण और अपर्याप्त है।

वर्तमान समय में शिक्षा-दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गंभीर मुद्दा है । अत: हम इन तीनों दार्शनिकों प्लेटो ,अरस्तू एवं विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन के मूल तत्व को अध्ययन करके वर्तमान समय ईसकी प्रासंगिकता को प्रकाश में लाने का प्रयास करेंगे।

- **अनुसंधान का विषय (State of Art):**

प्लेटो :- शिक्षा में आदर्शवाद का एक उदाहरण प्लेटो का शिक्षा-दर्शन है। प्राचीन यूनानी दार्शनिकों में प्लेटो ने शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक प्रभाव डाला है। प्लेटो का जन्म 428 ई० पू० में एथेन्स नगर में हुआ था। उन्की माता का नाम ऐरिस्टन और पिता का नाम पैरोटियन था। प्लेटो के माता-पिता उच्च कुलीन और धनी वर्ग के थे। बाल्यावस्था में प्लेटो को विद्याध्ययन के लिए सुकरात के विद्यालय में भेजा गया और उसने आठ वर्ष तक प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात के चरणों में बैठकर विद्या अध्ययन किया। 399 ई० पू० में जब सुकरात को मृत्यु दण्ड दिया गया तो प्लेटो पर इसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। वह एथेन्स छोड़कर दश वर्ष से भी अधिक समय तक एशिया माइनर से लेकर दक्षिणी इटली तक के देशों में घूमता रहा। भ्रमण में उसने स्थान-स्थान पर अनेक विद्याओं का अध्ययन किया। सुकरात की मृत्यु के ठीक 11 वर्ष बाद प्लेटो एथेन्स लौट आया और 388 ई० पू० में उसने एक विद्यालय खोला, जिसमें वह जीवन-पर्यन्त अपने विचारों का प्रचार करता रहा।

प्लेटो का शिक्षा-दर्शन - प्लेटो के अनुसार मानव-मस्तिष्क सदैव सक्रिय रहता है। मनुष्य अपने चारो ओर के परिवेश में जो कुछ देखता है, उसी की ओर दौड़ता है। बालक की इसी शक्ति का लाभ उठाकर अध्यापक को उसे शिक्षा देनी चाहिए। उसे बालक के परिवेश की वस्तुओं पर ध्यान देना चाहिए। बालक के आस-पास सुन्दर वस्तुएँ हों, उसमें स्वभावतया उनकी ओर आकर्षण हो और उसकी जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिले। इस प्रकार परिवेश की वस्तुओं की ओर मस्तिष्क की प्रतिक्रिया से ही शिक्षा की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। सुन्दर परिवेश मस्तिष्क को' उत्तम खाद्य देता है, जिससे मस्तिष्क का विकास होता है, इसलिए बालक को बराबर सुन्दर परिवेश में रखा जाना चाहिए। बाल्यावस्था में ही नहीं, बल्कि जीवन-भर मनुष्य को सुन्दर परिवेश की आवश्यकता होती है, क्योंकि प्लेटो के अनुसार मनुष्य की शिक्षा आजीवन चलती रहती है। प्लेटो ने अपनी शिक्षा में मस्तिष्क के विकास को अत्यन्त उच्च स्थान दिया है। शिक्षा का लक्ष्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं है, बल्कि नागरिक को उसके कर्त्तव्यों की शिक्षा देना भी है। जिस प्रकार मस्तिष्क से राज्य का विकास हुआ है, उसी तरह मस्तिष्क उन सभी अवस्थाओं से गुजरता है, जिन अवस्थाओं से राज्य को गुजरना पड़ता है। प्लेटो की शिक्षा का उद्देश्य मानव की पूर्णता है और इसीलिए उसने पाठ्यक्रम में सभी विषयों का समावेश किया है। प्लेटो की शिक्षा का उद्देश्य सत्य का साक्षात्कार है और वह सत्य एकांगी नहीं, बल्कि सर्वांग है।अरस्तू प्लेटो शरीर, मस्तिष्क और आत्मा सभी के विकास को आवश्यक मानते है, इसलिए उसने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया है-(1) शरीर-निर्माण, (2)विद्या-संस्कार, (3) संगीत-शिक्षा। प्लेटो कहते है-"**शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो कि उचित आदतों के द्वारा बालकों की नैसर्गिक मूल-प्रवृत्तियों के गुण का विकास करने के लिए दिया जाता है.... जोकि प्रारम्भ से अन्त तक हमें घृणित से घृणा तथा प्रिय से प्रेम करने को प्रेरित करता है।.... मेंरे दृष्टिकोण से इसी का नाम 'शिक्षा' है।**

अरस्तू :- महान् दार्शनिक एवं वैज्ञानिक अरस्तू का जन्म ईसा से लगभग 384 वर्ष पूर्व एथेन्स से 200 मील दूर स्थित स्थान स्टेगरा में हुआ। अरस्तू के पिता अपने समय के बड़े चिकित्सक थे। अतः अरस्तू को भी चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन करना पड़ा। इस अध्ययन के द्वारा उसने बालकों मनोविज्ञान के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार प्रारम्भ से ही अरस्तू को वैज्ञानिक शिक्षा की सुविधा रही। प्राचीन विश्व में वैज्ञानिकों के मध्य अरस्तू का स्थान था। यहाँ तक कि अरस्तू को विज्ञान का जन्मदाता भी कहा जाता है। अरस्तू से पहले किसी अन्य विद्वान ने इस प्रकार वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया थापू० में अरस्तू के गुरु प्लेटो के देहान्त के पश्चात् अरस्तू ने बारह वर्ष तक एशिया माइनर तथ मेसीडोनिया में भ्रमण किया। इसी समय वे तीन साल तक सिकन्दर का शिक्षक भी रहें। सिकन्दर अपने गुरु का बड़ा

आदर करते थे । 49 वर्ष की आयु में अरस्तू भ्रमण करने के उपरान्त एथेन्स वापस आया, और अपने अवशिष्ट जीवन के 13 वर्ष विद्यादान करते हुए व्यतीत कर दिये। अरस्तू की मृत्यु 62 वर्ष की अवस्था में हुई।

अरस्तू की वास्तविक रचनाएँ अप्राप्य है और अब जो कुछ भी प्राप्त हैं, वे उसके एकत्रित व्याख्यान, उनकी टीकायें तथा आलोचनाएँ हैं। अरस्तू की रचनाओं में तारतम्यता का अभाव है। साहित्यिक दृष्टि से अरस्तू की रचनाओं का महत्व प्लेटो से कम है। अरस्तू की रचनाओं में कल्पना तथा कलात्मक सौन्दर्य का अभाव है तथा तथ्यों के प्रकाशन पर ही अधिक बल दिया गया है। उसमें वास्तविक परिणामों (Conclusions) की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। अरस्तू ने अपनी विचारधारा को दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज-शास्त्र तथा राज्य पर ही केन्द्रित किया। अरस्तू तत्कालीन प्रचलित सिद्धान्तों की व्याख्या करके एक सर्वथा नवीन सिद्धान्त का प्रतिपादन करते थे, जिसको वह अधिक उपयुक्त समझते थे। उसमें प्रश्न के हर पहलू पर विचार करने की प्रवृत्ति थी, परन्तु विवाद ग्रस्त अवस्थाओं का वो पूर्णतः निराकरण न कर पायें।18 वर्ष की आयु में अरस्तू प्लेटो के पास अध्ययन के लिए गया और 20 वर्ष तक वहाँ अध्ययन करते रहें । अरस्तू अपने गुरु का प्रिय शिष्य था। प्लेटो उसको "रीडर" कहा करता था, क्योंकि वह पढ़ता बहुत था। अरस्तू और प्लेटो दोनों ही प्राचीन विश्व के महान विचारक माने जाते हैं।

अरस्तू का शिक्षा-दर्शन :- अरस्तू की रचनाओं पर उसके गुरु का प्रभाव था। अरस्तू भी "वस्तु " (Matter) और आकार " (Form) की व्याख्या में अध्यात्मवाद की आदर्शयादी प्रतीत होता है। प्लेटो की भांति अरस्तू भी बचपन में ही शिक्षा की नीव डालना पसन्द करके अवनति का कारण वहाँ की शिथिल शिक्षा व्यवस्था को मानते हैं । दोनों शरीर और मस्तिष्क की शिक्षा पर समान बल देते हैं। "राजनीति" को दोनों ही ने सम्मान से देखा और उसके उचित संचालन द्वारा ही मानव जाति का कल्याण सम्भव बताया। "कुशल नागरिकता" की "शिक्षा" में विश्वास करते हुए दोनों राज्य को इस सम्बन्ध में पूर्ण अधिकार देने के समर्थक थे। अरस्तू और प्लेटो दोनों ने ही शिक्षा को सम्पूर्ण जीवन का अंग माना है। प्लेटो ने अपनी आदर्श-शिक्षा योजना के सुव्यवस्थित कार्यक्रम का स्पष्टीकरण सुन्दर और साहित्यिक ढंग ने किया है। अरस्तू ऐसा करने में असमर्थ रहा। वह व्यवस्थित योजना न प्रस्तुत कर सका,किन्तु उसके बिचार वैज्ञानिक है। इस वैज्ञानिकता का प्लेटो में अभाव है। अरस्तू 'विचार' को "वस्तु" रूप समझता है। प्लेटो विचारों का स्वतन्त्र अस्तित्व मानता है। अरस्तू के अनुसार बिना "वस्तु" की कल्पना ही सम्भव नहीं है। प्लेटो "व्यक्ति" की जागृति में श्रेय अनुभव करता है। अरस्तू उसके प्रतिकूल "जाति" की जागृति में श्रेय अपेक्षित समझता है। अरस्तू ने शिक्षा का मुख्य

उद्देश्य सुख की प्राप्ति माना है। इस सुख की प्राप्ति तभी सम्भव है, जबकि मनुष्य सम्यक् कार्य करता हो। सम्यक् कार्य का तात्पर्य यह है कि उसकी विभिन्न शक्तियों के कार्य में एक सामञ्जस्य हो। अतः ठीक से कार्य करने की आदत का मनुष्य में पाया जाना सुख की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। अरस्तू के अनुसार उपरोक्त गुणों को उत्पन्न करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में अरस्तू ने खेल-कूद, और संगीत को भी पढ़ने और लिखने के साथ स्थान दिया। उसके विचार से आत्मा की उन्नति शारीरिक उन्नति पर आधारित है। किन्तु उसने खेल कूद की अधिकता को वर्जित माना। उसके अनुसार मानसिक कार्य अधिक करने से शरीर पर और शारीरिक श्रम अधिक करने से मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः मानसिक और शारीरिक परिश्रम एक साथ नहीं करने चाहिएं। मनोरंजन के साथ-साथ जीवनोपयोगी कलाओं के ज्ञान-वर्धन में भी खेलों का सहायक होना आवश्यक है। 14 वर्ष की आयु से पूर्व और 17 वर्ष की आयु के उपरान्त विकास पर ध्यान देने से स्वास्थ्य, बल, सौंदर्य और स्फूर्ति की वृद्धि होती है। अरस्तू शिक्षा क्षेत्र में संगीत को लाना आवश्यक नहीं समझता था। वह यह मानता था कि संगीत का उपयोग कठिन परिश्रम के उपरान्त मनोरंजन के लिये किया जा सकता है। यद्यपि उसको संगीत से विशेष प्रेम न था, फिर भी वे उसका वहिष्कार ना कर सका, क्योंकि उस समय यूनान में संगीत का बहुत प्रचार था।

विवेकानंद *:-* स्वामी विवेकानन्द का जन्म सन् 1883ई० में कलकत्ता के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनके जन्म का नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। नरेन्द्र जी के पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाइकोर्ट के वकील थे। उनका पारिवारिक वातावरण धार्मिक था। इसीलिए उन्हें बाल्यावस्था से ही, धर्म-कर्म, पूजा-पाठ, तथा धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि उत्पन्न हो गई। नरेन्द्र जी की बुद्धि बड़ी कुशाग्र थी। जब वे पाँच वर्ष के हुए तो उन्हें स्कूल भेज दिया गया। वहाँ उन्होंने इतिहास तथा साहित्य के साथ-साथ दार्शनिक परम्परा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके, पाश्चात्य दर्शन का भी विस्तृत अध्ययन किया। हरबर्ट स्पेन्सर, तथा जॉन स्टुअर्ट मिल उनके प्रिय दार्शनिक थे तथा एवं शैले उनके प्रिय कवि थे। इस प्रकार विद्यार्थी जीवन में ही नरेन्द्र जी अपने सुन्दर शरीर, प्रखर प्रतिभा, तथा बातचीत के अलौकिक ढंग के कारण लोकप्रिय बन गये। एक बार उनके प्रधानाचार्य श्री हेस्टी ने उनके बारे में कहा था- **"मैं बहुत दूर घूमा हूँ, पर मैंने इतना गुणवान एवं प्रतिभा सम्पन्न बालक जर्मन के विश्वविद्यालयों में भी नहीं देखा"**। एक दिन हेस्टी साहब ने उनका सम्पर्क स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी से कराया। स्वामी जी का नरेन्द्र जी के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके सम्पर्क में नरेन्द्र जी छः वर्ष रहे, तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करके नरेन्द्र से स्वामी विवेकानन्द वन गये।

विवेकानंद का शिक्षा-दर्शनः- स्वामी विवेकानन्द की नस-नस से भारतीयता तथा आध्यात्मिकता कूट-कूटकर भरी हुई थी। अतः उनके शिक्षा-दर्शन का आधार भी भारतीय वेदान्त तथा उपनिषद् ही रहे। वे कहते थे कि प्रत्येक प्राणी में आत्मा विराजमान है। इस आत्मा को पहचानना ही धर्म है। स्वामी जी का अटल विश्वास था कि सभी प्रकार का सामान्य तथा आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य के मन में है। अधिकतर इसकी खोज नहीं हो पाई है। यह ढका ही रह जाता है,पर जब इस पर पड़ा हुआ आवरण उतार दिया जाता है तो हम कहने लगते हैं कि हम सीख रहे हैं। संक्षेप में, स्वामी विवेकानन्द के अनुसार –**"कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं सिखाता। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप स्वयं ही सीखता है। बाहरी शिक्षक तो केवल सुझाव ही प्रस्तुत करता है जिससे भीतरी शिक्षक को समझने और सीखने के लिए प्रेरणा मिल जाती है"।** इसी दृष्टि से स्वामी जी ने अपने समय की शिक्षा को निषेधात्मक बताया तथा लोगों से कहा आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षायें पास कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो। पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन-संघर्ष के लिए तैयार नहीं कर सकती, जो चरित्र निर्माण नहीं कर सकती, जो समाज सेवा की भावना को विकसित नहीं कर सकती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ है।" उन्होंने अपने समय की शिक्षा का कलुषित चित्र प्रस्तुत करते हुए उसका घोर विरोध किया तथा बताया कि केवल पुस्तकीय ज्ञान व्यर्थ है। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि होती है, बुद्धि विकसित होती है तथा जिसको प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द अनुसार शिक्षा है (1)पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है।(2)ज्ञान व्यक्ति के मन में विद्यमान है। वह स्वयं ही सीखता है।(3)चित्त की एकाग्रता की शक्ति ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी है। इस शक्ति को विकसित करने के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक है।(4)मन, वचन तथा कर्म की शुद्धि आत्म-नियन्त्रण है।(5)शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का प्रथम उद्देश्य अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना है एबं शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास करना है। विवेकानन्द जी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना है.स्वामी जी ने आजीवन इस बात पर बल दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखना, श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना, शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। विवेकानंद ने लिखा है-" **उठो जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाये"।**

2.अनुसंधान की समस्या (Problem to be investigation):

अनुसंधान क्रम में निम्मनलिखित प्रशन उत्पन्न होते है :-

1) क्या पाश्चात्यय शिक्षा और प्राच्य शिक्षा का समायोजन संभव है? यदि संभव है तो कैसे ?

2) तीनों दार्शनिक प्राथमिक शिक्षा को सबसे अधिक महत्व देते हैं। लेकिन प्राथमिक शिक्षा के बारे में इन तीन दार्शनिकों के विचारों के बीच समानताएं एवं विविन्नता निर्धारित करना इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

3) 'महिला शिक्षा' पर युगनायक स्वामी विवेकनंद के विचार आज किस हद तक प्रासंगिक हैं, इसका एक दार्शनिक विश्लेषण की आवश्यकता है ?

3. अनुसंधान का प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति- (Research Design and Methodology)

यह शोध कार्य संबंधित सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा । इस शोध कार्य के लिए मुख्यतः पुस्तकावलोकन विधि की सहायता ली जाएगी और यहाँ शोध के लिए विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग कर सामान्य निष्कर्षों की प्राप्ति का प्रयास किया जाएगा । यह शोध मुख्य रूप से एक शुद्ध शोध होगा परन्तु शोध के सैद्धांतिक पहलू के साथ व्यावहारिक पहलू पर भी विचार किया जाएगा।

4.अनुसंधान प्रशनावली (Research Question).

1. शिक्षा एवं शिक्षा-दर्शन में कया अन्तर है?

2. मानव निर्माण में शिक्षा-दर्शन का महत्व कया है ?

3. प्लेटो के अनुसार शिक्षा-दर्शन का स्वरूप कया है?

4. अरस्तू के अनुसार शिक्षा-दर्शन का स्वरूप कया है?

5. विवेकानंद के अनुसार शिक्षा-दर्शन की अवधारणा कया है?

5. अनुसंधान सम्बन्धित तथ्य संकलन- (Source of Data)

इस शोध क्रम में विषय से संबंधित विचारकों एवं विद्वानों से संवाद किया जाएगा एवं उनके लेखों और शोध प्रबंधों से सहायता ली जाएगी ।

6. अनुसंधान सम्बन्धित तथ्य का विश्लेषण- (Data Analysis)

तथ्य विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए शोधकर्ता तीन प्रक्रियाओ का उपयोग करेगा। पहला संगठन , दूसरा सारांश और अंतिम बर्गीकरण। जिसका उपयोग तथ्य को सरल और सटिक बनाने मे किया जाता है । तथ्य विश्लेषण उपयोगी जानकारी की खोज, निष्कर्ष निकालने और निर्णय लेने मै मदद करता है। उनके विचारों का समाजिक संदेश कैसे था, इसका विश्लेषण करके वे भविष्य में भी कैसे समाज को प्रेरित कर सकते हैं, इसे भी ध्यान में रखा जा सकता है।

7. अनुसंधान विषय का वर्तमान में महत्व एवं प्रासंगिकता- (Its relevance to the present `day problem and need to the society): प्लेटो, अरस्तू एवं विवेकानन्द, शिक्षा-दर्शन संबंधी अवधारणाओं का अध्ययन वर्तमान में बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। यह विषय वर्तमान समाज में, समानता, और न्याय के मुद्दों पर प्रकाश डालने का एक महत्वपूर्ण भुमिका निभायेगा।

8.वर्तमान ज्ञान में अनुसंधान विषय का योगदान-(Contribution to the existing knowledge)

मेरे शोध कार्य का महत्व है, पाठकों विस्तृत रूप से प्लेटो ,अरस्तू एवं विवेकानन्द की शिक्षा-दर्शन की भावना समाज के विकास में उनके योगदान पढ़ने को मिलेगा जो भविष्य में उनके लिए लाभदायक सिद्ध होगा एवं भविष्य में पाठकों सुन्दर,नैतिक जीबन वतीत करने में सुवीधा प्रदान करेगा।

10. अनुसंधान विषय पर भविष्य में कार्य होने की संभावना- (Future Work)

यह शोध का विषय वर्तमान समय में इतना सारगर्भित है कि इस विषय पर शोध कार्य करना हमेशा ही महत्वपूर्ण रहा है। यह शोध विषय वर्तमान ही नहीं अपितु भविष्य में भी शोध कार्य होने की असीम संभावनाएँ रखता है।

11.संभावित अध्याय (Tentative Chapter)

भूमिका

प्रथम अध्याय -शिक्षा - दर्शन के मूल तत्व।

द्वितीय अध्याय -प्लेटो के अनुसार शिक्षा-दर्शन ।

तृतीय अध्याय -अरस्तू के अनुसार शिक्षा-दर्शन ।

चतुर्थ अध्याय -विवेकानंद के अनुसार शिक्षा-दर्शन ।

पंचम अध्याय -प्लेटो ,अरस्तू एवं स्वामी विवेवकानंद के अनुसार शिक्षा-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उसकी समसामयिक प्रासंगिकता।

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. Arora, V.K., The Social and Political Philosophy of Swami Vivekananda, 1968.

2. Ashrama, Advaita., What Religion is in the words of Swami Vivekananda, Advaita ashrama, 1972.

3. Vivekananda, Swami., Complete works of Swami Vivekananda, Kolkata: Advaita Ashrama, Vol. V., 2020.

4. Reddy, Rathna., The Political Philosophy of Swami Vivekananda, 1984.

5. Burnte, J., Aristotle on Education, University Press, Cambridge:1903

6. Burke, Marie Louise., Swami Vivekananda in America, New Advaita Ashrama, Culcutta: 1966.

7.Sharma, R.N., History of Western Philosophy, Kedarnath Ramnath, Meerut, 1982.

8. Plato's Theory of Education Rout- ledge & Kegan Paul London 1950.

9. Irwin, Terence, Plato's Moral Theory, Clarendon Press Oxford, 1977.

10.टंडन ,कमल नारायण,प्लेटो का शिक्षा-दर्शन ,कलस्सीकाल पाउबलीशीनग ,१९०८ ।

11.तिवारी,डॉ पंकज अरस्तू का शिक्षा-दर्शन,अ.पि.पब्लिशर ,२०१८ ।

12.शर्मा ,महेश ,स्वामी विवेकानंद का शिक्षा-दर्शन,प्रवात प्रकाशन ,२०१७ ।

13. तिवारी, श्रद्धा,स्वामी विवेकानंद एवं आधुनिक शिक्षा-दर्शन,हिमांशु प्रकाशन २०२१ ।